कार्यक्रम परियोजना रिपोर्ट(PPR)
(समाज विज्ञान विद्याशाखा)
लोक प्रशासन (स्नातकोत्तर)

कार्यक्रम के लक्ष्य और उद्देश्य (Programmer's mission & objectives)- इस कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य है, ''शिक्षा आपके द्वार''। दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा को उन दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाना है, जहाँ पर शिक्षार्थी अपने आर्थिक, भौगोलिक और पारिवारिक दायित्वों के कारण संस्थागत(Regular) शिक्षा नहीं ले पा रहे हैं और उन लोगों को शिक्षा से जोड़ना है जो किसी कारणवश उच्च शिक्षा से वंचित हैं।

कार्यक्रम की प्रासंगिकता(Relevance of the program with HEI's Mission and Goals)- इस कार्यक्रम की प्रासंगिकता है कि शिक्षार्थी, प्रशासन और लोक प्रशासन के संबंध में विस्तार से जान पाता है तथा वह लोक प्रशासन के विभिन्न आयामों के विषय में ज्ञान प्राप्त करके शिक्षा और शोध के क्षेत्र में अपनी उपयोगिता सिद्ध करता है। स्नातकोत्तर स्तर पर एक विषय के तौर पर 'लोक प्रशासन' को उत्तराखण्ड प्रदेश में मात्र 'उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय' ही संचालित करता है।

लक्षित शिक्षार्थी समूह की प्रकृति (Nature of prospective target group of learners)- इस कार्यक्रम का लक्षित शिक्षार्थी समूह वह व्यक्ति है जो राज्य के दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्र में रहते हैं एवं विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन के द्वारा ज्ञान अर्जित करने एवं उसका विस्तार करने हेतु प्रयासरत हैं। इस कार्यक्रम के द्वारा ना केवल दूरस्थ क्षेत्रों को केन्द्रित किया गया है, बल्कि उन जनमानस को भी इसमें सम्मिलित किया गया है, जो किसी व्यवसाय या नौकरी में रहते हुए संस्थागत(Regular) शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते और अधिक आयु हो जाने के कारण औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते।

मुक्त एवमं दूरस्थ प्रणाली में विशिष्ट कौशल व योग्यता प्राप्त करने हेतु कार्यक्रम की उपयुक्ता (Appropriateness of programme to be conducted in Open and Distance Learning mode to acquire specific skills and competence)- शिक्षार्थी लोक प्रशासन में स्नातकोत्तर होने के उपरान्त उच्च शिक्षा में अपनी सेवाऐं देने के लिए तथा प्रशासन के क्षेत्र में शोध के लिए न्यूनतम अर्हता अर्जित कर लेता है। लोक प्रशासन के अध्ययन के उपरान्त शिक्षार्थी प्रशासन के सैद्धान्तिक पक्ष के साथ-साथ व्यवहारिक पक्ष का भी ज्ञान प्राप्त कर लेता है। एक कुशल प्रशासक के तौर पर समाज में अपनी सेवाऐं दे सकता है।

निर्देशात्मक संरचना (Instructional Design)- लोक प्रशासन विषय में स्नातकोत्तर स्तर पर दो वर्षीय पाठ्यक्रम को सेमेस्ट प्रणाली के आधार पर चलाया गया है, जिसमें प्रत्येक सेमेस्टर के प्रश्न-पत्रों को खण्डों और इकाईयों में विभक्त किया गया है। तथा प्रत्येक प्रश्न-पत्र के लिए 4 श्रेयांक (Credit) निश्चित किये गये हैं, अत: स्नातकोत्तर विषय में चार सेमेस्टर में 18 प्रश्न-पत्रों में 72 श्रेयांक (Credit) अर्जित करने होते हैं। प्रत्येक खण्ड में न्यूनतम दो और अधिकतम पांच इकाईयां हैं। स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष में 8 प्रश्न-पत्र- लोक प्रशासन के सिद्धान्त (भाग- 1), लोक प्रशासन के सिद्धान्त (भाग- 2), भारत में लोक प्रशासन (भाग- 1), भारत में लोक प्रशासन (भाग- 2), तुलनात्मक लोक प्रशासन(भाग- 1), तुलनात्मक लोक प्रशासन(भाग- 2), भारत में स्थानीय शासन (भाग- 1), भारत में स्थानीय शासन (भाग- 2) हैं और द्वितीय वर्ष में 10 प्रश्न-पत्र- विकास प्रशासन (भाग- 1), विकास प्रशासन (भाग- 2), कार्मिक प्रशासन (भाग- 1), कार्मिक प्रशासन(भाग- 2), वित्तीय प्रशासन (भाग- 1), वित्तीय प्रशासन (भाग- 2), उत्तराखण्ड में राज्य प्रशासन (भाग- 1), उत्तराखण्ड में राज्य प्रशासन (भाग- 2), प्रशासनिक चिंतक (भाग- 1), प्रशासनिक चिंतक (भाग- 2) हैं। कार्यक्रम की न्यूनतम अवधि दो वर्ष और अधिकतम छ: वर्ष है। लोक प्रशासन संकाय के लिए सहायक अकादमिक, सहायक प्राध्यापक, सह प्राध्यापक और प्राध्यापक की आवश्यकता है। लोक

प्रशासन में विश्वविद्यालय स्तर पर स्वयं की अध्ययन सामग्री उपलब्ध है। अध्ययन सामग्री को छात्रों तक किताबों के माध्यम के साथ-साथ आनलाईन, ऑडियो-विडियो के माध्यम से भी उपलब्ध कराया जाता है।

पाठ्यक्रम (Syllabus)

एम0 ए0 प्रथम वर्ष

प्रथम सेमेस्टर

लोक प्रशासन के सिद्धान्त भाग- 1 (एमएपीए- 501)	लोक प्रशासन के सिद्धान्त भाग- 2 (एमएपीए- 502)
खण्ड-1 **लोक प्रशासन- अर्थ, प्रकृति क्षेत्र, महत्व, विभिन्न दृष्टिकोण और नवीन लोक प्रशासन** 1. लोक प्रशासन का अर्थ, प्रकृति क्षेत्र, महत्व 2. लोक प्रशासन के अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोण 3. लोक प्रशासन तथा निजी प्रशासन 4. लोक प्रशासन का विकास, नवीन लोक प्रशासन 5. लोक प्रशासन का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध **खण्ड-2** **विकास प्रशासन व तुलनात्मक लोक प्रशासन** 6. विकास प्रशासन अर्थ, विशेषताएं, क्षेत्र 7. विकसित और विकासशील देशों में विकास प्रशासन 8. तुलनात्मक लोक प्रशासन अर्थ, क्षेत्र एवं अध्ययन के दृष्टिकोण 9. लोक प्रशासन एवं लोक नीति **खण्ड-3** **लोक प्रशासन में संगठन** 10. संगठन-महत्व, अर्थ, औपचारिक संगठन, अनौपचारिक संगठन 11. संगठन की विचारधाराएं - शास्त्रीय, मानव संबंध विषयक, व्यवस्था विचारधारा 12. संगठन के सिद्धान्त- पद सोपान, नियंत्रण का क्षेत्र, आदेश की एकता 13. समन्वय, प्रत्यायोजन, पर्यवेक्षण, केन्द्रीकरण, विकेन्द्रीकरण	**खण्ड-1** **संगठन की संरचना** 1. मुख्य कार्यपालिका 2. सूत्र तथा स्टाफ 3. भर्ती, प्रशिक्षण एवम् प्रोन्नति 4. सूत्र अभिकरण- विभाग, 5. सूत्र अभिकरण- लोक निगम, स्वतंत्र नियामकीय आयोग **खण्ड-2** **लोक प्रशासन पर नियंत्रण, प्रबन्ध और नेतृत्व** 6. लोक प्रशासन पर नियंत्रण: विधायी नियंत्रण, कार्यकारी नियंत्रण, न्यायिक नियंत्रण 7. प्रबन्ध, अर्थ, प्रकृति, सहभागी प्रबन्ध, अच्छे प्रबन्ध की कसौटियॉं 8. नेतृत्व, नीति निर्धारण तथा निर्णय करना **खण्ड-3** **नियोजन, नौकरशाही और लोकसेवा** 9. नियोजन: अर्थ, प्रकार, नियोजन, प्रक्रिया, योजना आयोग, राष्ट्रीय विकास परिषद 10. नौकरीशाही- अर्थ, नौकरशाही के प्रकार, गुण, दोष, मैक्स बेबर की नौकरशाही 11. लोकसेवा का अर्थ, कार्य, भारत में आखिल भारतीय सेवाएं, भारतीय प्रशासनिक सेवा **खण्ड-4** **बजट, लेखा परिक्षण और प्रदत्त विधि निर्माण** 12. बजट- विधायी नियंत्रण का एक उपकरण - बजट का आर्थिक महत्व बजट निर्माण की प्रक्रिया (भारत में) 13. निष्पादन बजट, शून्य आधारित बजट, लोक लेखा समिति, अनुमान समिति 14. प्रशासकीय विधि- डायसी, प्रदत्त विधि निर्माण

भारत में लोक प्रशासन भाग- 1 (एमएपीए- 503)	भारत में लोक प्रशासन भाग- 2 (एमएपीए- 504)
खण्ड-1 **भारत में प्रशासन का विकास और विशेषताऐं** 1. भारतीय प्रशासन का विकास 2. भारतीय प्रशासन की विशेषताएं 3. भारतीय प्रशासन सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व संवैधानिक पर्यावरण 4. भारतीय संविधान की विशेषताएं **खण्ड-2** **संघीय शासन-1** 5. राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति 6. प्रधानमंत्री, मन्त्रिपरिषद	**खण्ड- 1** **लोक सेवाएं और अखिल भारतीय सेवाएं- 2** 1. जन शिकायत निवारण, लोकपाल, लोकसेवा में तटस्थता 2. प्रशासन में भ्रष्टाचार 3. राजनीति और प्रशासन का अपराधीकरण **खण्ड- 2** **वित्तीय प्रशासन एवं समितियां** 4. भारत में वित्तीय प्रबन्ध व बजट निर्माण प्रक्रिया 5. सार्वजनिक व्यय पर नियंत्रण- विधायी, कार्यकारी, न्यायिक

7. संसद- लोक सभा और राज्य सभा
8. मन्त्रिमंडलीय सचिवालय, केन्द्रीय सचिवालय, प्रधानमंत्री सचिवालय

खण्ड-3
संघीय शासन-2
9. राजनीति और प्रशासन में सम्बन्ध
10. केन्द्र -राज्य सम्बन्ध

खण्ड-4
राज्य शासन
11. राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मन्त्रिपरिषद
12. राज्य सचिवालय, मुख्य सचिव

खण्ड-5
लोक सेवाएं और अखिल भारतीय सेवाएं- 1
13. लोक सेवाऐं- अर्थ, कार्य आधुनिक प्रवृत्तियॉं, विशेषताएं
14. अखिल भारतीय सेवाएं, केन्द्रीय सेवाएं, भर्ती, प्रशिक्षण
15. स्वामी कर्मचारी संबंध

6. लोक लेखा समिति, अनुमान समिति, लोक उपक्रमों पर समिति विभागीय समितियां, नियंत्रक महालेखा परीक्षक
7. लेखांकन, लेखा परीक्षण

खण्ड- 3
स्थानीय स्वशासन
8. पंचायती राज, 73 वां संवैधानिक संशोधन
9. नगरीय स्थानीय सरकार 74वां संवैधानिक संशोधन
10. स्वतन्त्रता पश्चात जिला प्रशासन, जिलाधिकारी

खण्ड- 4
संवैधानिक संस्थाएं
11. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग
12. राष्ट्रीय महिला आयोग
13. राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग
14. राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग

द्वितीय सेमेस्टर

तुलनात्मक लोक प्रशासन भाग- 1 (एमएपीए- 505)

खण्ड- 1
तुलनात्मक लोक प्रशासन- अर्थ, दृष्टिकोण, पर्यावरण
1.तुलनात्मक लोक प्रशासनः अवधारणा, अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व
2. तुलनात्मक लोक प्रशासन: अध्ययन के दृष्टिकोण- परम्परागत, दृष्टिकोण, अर्वाचीन दृष्टिकोण, व्यवहारवादी दृष्टिकोण
3. प्रशासन का सांस्कृतिक परिवेश, प्रशासन का सामाजिक परिवेश, राजनीतिक परिवेश, आर्थिक परिवेश

खण्ड-2
प्रशासन की विशेषताएं
4. विकसित देशों की प्रशासनिक विशेषताएं
5. विकासशील देशों की प्रशासनिक विशेषताएं
6. भारतीय प्रशासन की विशेषताएं

खण्ड-3
प्रशासन पर नियंत्रण
7. प्रशासन पर कार्य पालिका का नियंत्रण,
8. प्रशासन पर विधायी नियंत्रण
9. प्रशासन पर न्यायिक नियंत्रण

खण्ड-4
तुलनात्मक लोक प्रशासन के प्रतिमान-1
10. तुलनात्मक लोक प्रशासन के प्रतिमान (मॉडल) - मैक्स बेबर का नौकरशाही मॉडल
11. परिस्थितिकीय दृष्टिकोण, संरचनात्मक कार्यात्मक दृष्टिकोण
12. विकास मॉडल, डाउन्स मॉडल

तुलनात्मक लोक प्रशासन भाग- 2 (एमएपीए- 506)

खण्ड- 1
तुलनात्मक लोक प्रशासन के प्रतिमान- 2
1. नौकरशाही का आदर्श प्रारूप, मैक्स बेबर की आदर्शवादी नौकरशाही प्रणाली, मैक्स बेबर के नौकरशाही के आदर्शवादी प्रतिमान की विशेषताएं , आलोचना
2. मैक्स बेबर का सत्ता प्रतिमान, तृतीय विश्व की प्रशासनिक व्यवस्था और बेबर का 'सत्ता' प्रतिमान
3. एफ0 डब्ल्यू0 रिग्स का सामाजिक प्रारूप- प्रिज्मैटिक समाज, साला मॉडल

खण्ड- 2
राजनीति और प्रशासन
4. राजनीति एवं प्रशासन में संबंध
5. राजनीति और नीति निर्माण संस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन
6. प्रशासनिक ढांचा तुलनात्मक अध्ययनः सहायक अभिकरण, स्टाफ अभिकरण

खण्ड- 3
सेवी वर्ग प्रशासन
7. सेवी वर्ग प्रशासनः तुलनात्मक अध्ययनः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, अमेरिका, फ्रान्स के प्रशासन की विशेषता
8. पदोन्नति, सेवानिवृत्ति लाभ
9. लोक सेवाओं का तुलनात्मक अध्ययन

खण्ड- 4
नागरिकों का शिकायत निवारण यन्त्र
10. ओम्बुड्समैन का अर्थ- स्वीडन में ओम्बुड्समैन, अमेरिका में जन-शिकायत
11. भारत में लोकपाल एवं लोकायुक्त
12. बजट निर्माण प्रक्रिया- भारत, अमेरिका

भारतीय में स्थानीय शासन भाग- 1 (एमएपीए- 507)

खण्ड-1

भारत में स्थानीय शासन भाग- 2 (एमएपीए- 508)

खण्ड- 1

स्थानीय शासन- परिचय

1. स्थानीय शासन- परिचय, भूमिका, महत्व
2. ग्रामीण संस्थाओं का विकास
3. सामुदायिक विकास कार्यक्रम

खण्ड-2

पंचायत व्यवस्था

4. बलवंत राय मेहता समिति, प्रतिवेदन एवं त्रिस्तरी व्यवस्था
5. ग्राम पंचायत
6. क्षेत्र पंचायत
7. जिला परिषद
8. पंचायती राज तथा 73 वॉ संशोधन

खण्ड- 3

पंचायत व्यवस्था का प्रशासन

9. कर्मचारी वर्ग व्यवस्था
10. पंचायती राज संस्थाओं का वित्तीय प्रशासन
11. ग्रामीण स्थानीय शासन प्रशासनिक ढांचा
12. पंचायती राज संस्थाओं पर राज्य का नियंत्रण

नगरीय शासन- 1

1. नगरीय शासन का विकास
2. नगरीय शासन
3. नगरीय शासन संबंधी सुधार
4. चौहत्तरवां संवैधानिक संशोधन एवं नगरीय शासन का आधुनिक परिप्रेक्ष्य

खण्ड- 2

नगरीय शासन- 2

5. नगर निगम
6. नगर पालिका
7. छावनी परिषद, औद्योगिक नगरियां
8. स्थानीय शासन का संघात्मक रूप

खण्ड- 3

नगरीय शासन एवम् राज्य प्रशासन

9. नगरीय संस्थाओं पर राज्य का नियंत्रण
10. नगरीय शासन के आय के साधन
11. शासनिक ढांचा: नगरीय स्थानीय प्रशासन
12. भारत में स्थानीय शासन की प्रगति का मूल्यांकन

एम0 ए0 द्वितीय वर्ष

तृतीय सेमेस्टर

विकास प्रशासन भाग- 1 (एमएपीए- 601)

खण्ड-1

संकल्पना और दृष्टिकोण

1. विकास प्रशासन- संकल्पना और अर्थ
2. उद्भव, क्षेत्र और महत्व
3. भारत में विकास प्रशासन की संवृद्धि

खण्ड-2

विकास नीति एवं नियोजन

4. स्वतन्त्रता के समय भारत की सामाजिक आर्थिक रूपरेखा
5. मिश्रित अर्थव्यवस्था मॉडल तथा इसका तर्क संगत आधार और महत्व
6. योजना की भूमिका
7. विकास का उद्देश्य

खण्ड-3

विकास के लिए नियोजन संस्थाएं

8. योजना आयोग तथा राष्ट्रीय विकास परिषद
9. राज्य योजना तन्त्र (मशीनरी)
10. जिला नियोजन
11. आधार स्तरीय नियोजन

खण्ड-4

अधिकारी तंत्र(नौकरशाही) और विकास-1

12. अधिकारी तन्त्र (नौकरशाही) की भूमिका
13. भारतीय अधिकारी तन्त्र (नौकरशाही) की औपनिवेशिक विरासत
14. भारतीय अधिकारी तन्त्र (नौकरशाही) की सामाजिक पृष्ठभूमि

विकास प्रशासन भाग- 2 (एमएपीए- 602)

खण्ड- 1

अधिकारी तंत्र(नौकरशाही) और विकास

1. तटस्थ बनाम प्रतिबद्ध अधिकारी तन्त्र (नौकरशाही)
2. सरकारी अधिकारियों और राजनेताओं के बीच संबंध
3. अधिकारी तन्त्र (नौकरशाही) की क्षमता में वृद्धि करना

खण्ड- 2

विकेन्द्रीकरण और विकास

4. लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण की अवधारणा
5. पंचायती राज का उद्भव और भूमिका, उभरते प्रतिमान
6. पंचायती राज का भविष्य एवं समस्याएं
7. स्वैच्छिक अभिकरणों की भूमिका
8. सहकारिता एवं विकास

खण्ड- 3

सार्वजनिक क्षेत्र और विकास

9. सार्वजनिक/सहकारी क्षेत्र और विकास
10. सार्वजनिक उद्यम के स्वास्थ्य
11. विकास निगमों की भूमिका
12. सार्वजनिक क्षेत्र की प्रशासनिक समस्याएं

कार्मिक प्रशासन भाग- 1 (एमएपीए- 603)

खण्ड-1
कार्मिक प्रशासन
1. कार्मिक प्रशासन की अवधारणा, प्रकृति और क्षेत्र
2. कार्मिक प्रशासन के कार्य और महत्व
3. प्रशासनिक व्यवस्था में लोक सेवा एवं उनकी भूमिका
4. भारत में कार्मिक लोक प्रशासन की विशेषताएं

खण्ड-2
भारत में लोक सेवा
5. आधुनिक नौकरशाही के सन्दर्भ में लोकसेवा
6. नौकरशाही के आधार
7. भारत में लोक सेवा का विकास
8. सेवाओं का वर्गीकरण
9. सामान्यज्ञ बनाम विशेषज्ञ

खण्ड-3
कार्मिक अभिकरण
10. संघ लोक सेवा आयोग/राज्य लोक सेवा आयोग/कर्मचारी चयन आयोग
11. केन्द्रीय और राज्य प्रशिक्षण संस्थान
12. प्रशासनिक अधिकरण

कार्मिक प्रशासन भाग- 2 (एमएपीए- 604)

खण्ड- 1
कार्मिक प्रबन्धनः नीति और व्यवहार
1. कार्मिक नीति
2. भर्ती (सेवाओं में आरक्षण)
3. पदोन्नति
4. प्रशिक्षण

खण्ड- 2
कार्य दशाएं एवं सेवा दशाएं
5. वेतन प्रशासन
6. आचार एवं अनुशासन
7. प्रशासनिक नैतिकता एवम् कार्मिक प्रशासन में भ्रष्टरचार

खण्ड- 3
नियोक्ता कार्मिक संबंध
8. नियोक्ता कार्मिक संबंध
9. कार्मिक संघ
10. अभिप्रेरणा और नैतिकता
11. कार्मिको की सेवा संबंधी शिकायतें एवम् उनका निवारणः प्रावधान व प्रक्रियाएं

चतुर्थ सेमेस्टर

वित्तीय प्रशासन भाग- 1 (एमएपीए- 605)

खण्ड- 1
वित्तीय प्रशासनः आधार और उद्देश्य
1.वित्तीय प्रशासन की प्रकृति और कार्यक्षेत्र
2.वित्तीय प्रशासन के उद्देश्य और सिद्धान्त
3. मिश्रित अर्थव्यवस्था
4. केन्द्र राज्य वित्तीय संबंध

खण्ड- 2
बजट प्रक्रिया और बजट व्यवस्था-1
5. राजकोषीय नीति, समता और सामाजिक न्याय
6. सरकारी बजट प्रक्रियाः सिद्धान्त और कार्य
7. भारतीय बजट व्यवस्था

खण्ड- 3
बजट प्रक्रिया और बजट व्यवस्था-1
8. सरकारी व्यय का वर्गीकरण
9. सार्वजनिक व्यय सिद्धान्त एवं विकास
10. निष्पादन बजट प्रणाली, शून्य आधारित बजट प्रणाली

खण्ड- 4
साधन संगठन
11. राजस्व के स्रोतः कर एवं करों के अतिरिक्त आय
12. घाटे का वित्तीयन
13. सार्वजनिक ऋण प्रबन्धन एवं भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका

वित्तीय प्रशासन भाग-2 (एमएपीए- 606)

खण्ड- 1
सार्वजनिक निधियों का निवेश एंव विनिवेश
1. वित्तीय मूल्यांकन
2. आर्थिक और सामाजिक मूल्यांकन
3. भारत में विनिवेश उद्देश्य एंव चुनौतियां

खण्ड- 2
विधायी, वित्तीय और कार्यकारी नियंत्रण
4. विधायी नियंत्रण
5. वित्तीय समितियों की व्यवस्था
6. कार्यकारी नियंत्रण

खण्ड- 3
लेखा एवं अंकेक्षण
7. भारत में लेखाशास्त्र की प्रणाली
8. भारत में लेखा परीक्षण की प्रणाली
9. लेखा नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक की भूमिका

खण्ड- 4
सार्वजनिक उपक्रमों एवमं स्थानीय शासन का वित्तीय प्रशासन
10. सार्वजनिक उपक्रमों का वित्तीय प्रशासन
11. सार्वजनिक उपक्रमों की वित्तीय स्वायत्तता एवं जबाव देही
12. शहरी शासन का वित्तीय प्रशासन
13. ग्रामीण शासन का वित्तीय प्रशासन

उत्तराखण्ड में राज्य प्रशासन भाग-1 (एमएपीए- 607)

उत्तराखण्ड में राज्य प्रशासन भाग- 2 (एमएपीए- 608)

खण्ड- 1

उत्तराखण्ड में राज्य प्रशासन

1. उत्तराखण्ड का इतिहास- प्रशासनिक सन्दर्भ में
2. उत्तराखण्ड में राज्य प्रशासनः एक पारिस्थिकी विश्लेषण
3. केन्द्र राज्य सम्बन्ध: विधायी और प्रशासनिक
4. भारत में केन्द्र-राज्य वित्तीय सम्बन्ध- उत्तराखण्ड के वित्तीय संदर्भ में

खण्ड- 2

उत्तराखण्ड की प्रशासनिक संरचना

5. राज्यपाल, मुख्यमंत्री
6. राज्य सचिवालय, मंत्रिमण्डलीय सचिवालय,मुख्य सचिव
7. राज्य योजना आयोग
8. राज्य में प्रशासनिक सुधार

खण्ड- 1

महत्वपूर्ण विभाग

9. गृह विभाग, वित विभाग, आपदा विभाग
10. उत्तराखण्ड में जनजातियों एवं जनजाति विकास हेतु प्रशासनिक तंत्र
11. आपदा प्रबन्धन

खण्ड- 2

उत्तराखण्ड में कार्मिक प्रशासन

12. राज्य लोक सेवा आयोग
13. भर्ती, प्रशिक्षण(एटीआई के संदर्भ में) एवम् पदोन्नति
14. स्थानीय स्वशासन
15. सांस्कृतिक एवम् भाषा विकास

प्रशासनिक चिंतक (एमएपीए- 609)

खण्ड- 1

कौटिल्य, वुड्रो विल्सन

1. कौटिल्य
2. वुड्रो विल्सन

खण्ड- 2

फेयोल, विन्सलो टेलर, बेबर, कार्ल मार्क्स

3. हेनरी फेयोल
4. फ्रेडरिक विन्सलो टेलर
5. मैक्स बेबर
6. कार्ल मार्क्स

खण्ड- 3

लूथर गूलिक, लिण्डल उर्विक, मेरी पार्कर फालेट

7. लूथर गूलिक
8. लिण्डल उर्विक
9. मेरी पार्कर फालेट

प्रशासनिक चिंतक (एमएपीए- 610)

खण्ड- 1

मेयो, चेस्टर आई बर्नार्ड, हरबर्ट ए0 साइमन

1. जॉर्ज एल्टन मेयो
2. चेस्टर आई बर्नार्ड
3. हरबर्ट ए0 साइमन

खण्ड- 2

अब्राहम मास्लो, डगलस मैक्ग्रेगर, क्रिस अर्गिरिस, फ्रेडरिक हर्जबर्ग

4. अब्राहम मास्लो
5. डगलस मैक्ग्रेगर
6. क्रिस अर्गिरिस, फ्रेडरिक हर्जबर्ग

खण्ड-3

रेंसिस लिकर्ट,एफ0 डब्ल्यू0 रिग्स, आर0 के0 मर्टन

7. रेंसिस लिकर्ट
8. एफ0 डब्ल्यू0 रिग्स
9. आर0 के0 मर्टन

प्रवेश, पाठ्यक्रम आदान-प्रदान और मूल्यांकन की प्रक्रिया (Procedure for admissions, curriculum transaction and evaluation)- लोक प्रशासन विषय में स्नातकोत्तर स्तर पर वर्ष में दो बार (ग्रीष्म और शीत सत्र में) प्रवेश की प्रक्रिया है। स्नातकोत्तर में प्रवेश के लिए स्नातक उत्तीर्ण होना आवश्यक है। स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष के दोनों सेमेस्टरों का शुल्क एक साथ रू0 5150 और द्वितीय वर्ष का शुल्क रू0 5800 शुल्क लेने का प्रावधान किया गया है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्ग के छात्रों के लिए शुल्क मांफी का प्रावधान है। प्रवेश, पाठ्यक्रम और मूल्यांकन हेतु विभिन्न वैब-टूल्स का प्रयोग किया जाता है। शिक्षार्थी के मूल्यांकन हेतु अकादमिक सत्र के दौरान सत्रीय-कार्य और वार्षिक परीक्षा के द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।

शुल्क, प्रति सेमेस्टर, रू0 1500	4 सेमेस्टर,	रू0 6000
परीक्षा शुल्क , प्रति प्रश्न पत्र रू0 250	18 प्रश्न-पत्र,	रू0 4500
Miscellaneous		रू0 150
डिग्री शुल्क		रू0 300
कुल शुल्क		रू0 10950

प्रयोगशाला और पुस्तकालय संसाधनों की आवश्यकता (Requirement of the laboratory support and Library Resources)- विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षार्थियों के लिए के लिए पुस्तकालय की व्यवस्था है, जिसमें विद्यार्थी सन्दर्भ पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के प्रत्येक अध्ययन-केन्द्र में भी पुस्तकालय की उपलब्धता है।

कार्यक्रम की अनुमानित लागत और प्रावधान (Cost estimate of the programme and the provisions)- लोक प्रशासन कार्यक्रम के अन्तर्गत इकाई निर्माण हेतु लेखन, सम्पादन और मुद्रण हेतु प्रत्येक इकाई में 9500 हजार रूपये की लागत से लगभग 20 लाख 14 हजार रूपये की धनराशि प्रयोग में लाई गयी है।

गुणवत्ता नीति-तंत्र और कार्यक्रम के संभावित परिणाम(Quality assurance mechanism and expected programme outcomes)- कार्यक्रम की गुणवत्ता के लिए समय-समय पर विशेषज्ञ समिति (Expert committee) और अध्ययन बोर्ड (Board of Study) के द्वारा विषय-विशेषज्ञों की सलाह ली जाती है।